International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 65-67

नरेश मेहता के काव्य में राजनीतिक दृष्टि

डॉ. राजेन्द्र सिंह

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग जनता कॉलेज, चरखी दादरी हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

''पार्थ ! शकुनि के पाँसों की आवाज
सुनायी पड़ती अब भी।''[1]

कहने की आवश्यकता नहीं है कि राजनीति एक जुआ है यहाँ छल–प्रपंच भ्रष्टाचार और स्वार्थ का बोलबाला सदैव रहा है। कथनी और करनी में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है परन्तु जब तक राजनीतिक पासा आपके अनुकूल है तब तक विजय आपके कदम चूमती है और यदि प्रतिकूल हो गया तो हार निश्चित है। शकुनि महाभारत के युद्ध का महत्त्वपूर्ण पासा था। युद्ध उसी के छल–प्रपंच का परिणाम था। महाभारत के युद्ध के पीछे उसकी राजनीतिक कुटिलता छिपी हुई थी। साथ ही वह कौरव–पाण्डवों का सर्वनाश कर उनसे प्रतिशोध लेना चाहता था। परन्तु आज परिवर्तित राजनीतिक परिवेश में राजनीतिक मापदण्ड़ बदल गये हैं।

नरेश मेहता जी ने अपनी काव्य कृतियों में भ्रष्ट राजनीति और राजनीतिज्ञों का कच्चा चिट्ठा पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि नेता का कर्म समाज और देश को उन्नति के चरम शिखरों पर ले जाना है लेकिन आज का नेता इन सब से दूर निजी स्वार्थ और लाभ को महत्त्व देता है। वे देश के संदर्भ में कम सोचते हैं और अपने और परिवार के बारे में अधिक। उन्हें केवल और केवल अपनी सुख–सुविधाओं की चिन्ता है, देश भले ही रसातल में चला जाये–

''वे जितना–जितना
उड़ते जाते हैं।
उतना–उतना
देश
रसातल में जाता है।''[2]

प्राचीन काल से राजनीति में ऐशो–आराम, मौजमस्ती प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से चली आ रही है। जिसको वर्तमान राजनीति में भी देखा जा सकता है। इसका यथार्थ रूप नरेश मेहता जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

''बस इतिहास के ये बहेलिए भी
दुनिया की सारी पहुंच के बाहर
किलों में सुरक्षित बने
छत्र–चंवरों के नीचे बैठे
गिलोरियाँ चबाते, गुलाब सुँघते
ठुमरियों की शराब में धुत।''[3]

राजनीतिक मूल्यों में अवमूलयन लगातार रूप से हो रहा है। अतीत की ऐतिहासिक क्रूरता ने भी मानवीय मूल्यों को पतनोन्मुखी बनाया। इसी ऐतिहासिक क्रूरता ने सत्य को दबाकर असत्य को आगे बढ़ाया। जिसके फलस्वरूप छल–कपट और अमानवीय इच्छाओं में बढ़ोतरी हुई। इस बढ़ोतरी ने न केवल अव्यवस्था को बढ़ाया बल्कि समाज को भी पतन की ओर अग्रसर किया। नेरश मेहता ने अतीत की व्यतीत क्रूरता को व्यक्त करते हुए कहा है–

''भले की वह आमदरफ्ल
खून टपकातें, बेड़ियों में कसे
बागी साहबे–आलमों
या दगाबाज, सूबेदारों, सिपहसालारों की रही हो,
या जिबह के लिए ले जाये जाते
भेड़ बकरों जैसी
युद्ध बन्दियों की रही हो,
या फिर रोती कल्पाती
दहशत जदा औरतों के
आँसुओं से तर नूरानी चेहरों की रही हो।''[4]

इतिहास सदैव अपने आप को दोहराता रहा है। इतिहास की घटनाओं से हमें सीखना चाहिए परन्तु मानव का स्वभाव है कि वह पूर्व घटनाओं से कुछ सीखना नहीं चाहता। इतिहास गवाह है कि यहाँ पर्याप्त मात्रा में खूनी संघर्ष हुए हैं लेकिन इतिहास खड़ग और बन्दूक तोप इत्यादि से नहीं लिखा जाना चाहिए बल्कि मानवीयता और मानवीय उदात्त भावों से लिखा जाना चाहिए–

''इतिहास
खड्ग से नहीं
मानवीय उदात्तता से लिखा जाना चाहिए।''[5]

वास्तव में ऐतिहासिक क्रूरता में बर्बरता समाहित रहती है। प्राचीन इतिहास भी रक्तस्नात है। सिंहासन भी रक्त तिलकित होता है। जिससे उसके अतीत और वर्तमान में अनेक रक्तगाथाएँ समाहित रहती हैं। नरेश मेहता जी 'संशय की एक रात' में कहते हैं–

''इतिहास किसी भाषा का नाम नहीं
और न ही
किसी उदात्त मानवीय सम्बन्ध का नाम
वह तो शक्ति के लिए किया गया
नितान्त अमानुषी रक्त स्नान है।''[6]

संसार में युद्ध कोई नहीं चाहता क्योंकि युद्ध विनाश का कारण बनता है, उन्नति–प्रगति में बाधक है। वास्तव में युद्ध को सीधा निमंत्रण कोई नहीं देता। प्रबुद्धजनों ने सदैव ही युद्ध को टालने की वकालत की है क्योंकि

''प्रत्येक युद्ध–
जिसमें से एक राज्य जन्म लेता है,
कितनी स्त्रियों को विधवा
और बच्चों को अनाथ कर जाता है
और वे जीवन संघर्ष में
दिशाहीन खो जाने के लिए
बाध्य हो जाते हैं।''[7]

नरेश मेहता जी ने 'संशय की एक रात' में युद्ध के संदर्भ में वैचारिक मंथन किया है। यह मंथन अपने कलेवर में समकालीन राजनीतिक प्रासंगिकता को समाहित किए हुए हैं। इसके नायक राम नहीं चाहते कि युद्ध जन–विनाश का आधार बने इसलिए वे सोचते हैं कि युद्ध और शांति में किसे अपनाया जाये लेकिन इसका निर्णय और समाधान राम स्वयं नहीं कर पाते। इन सबके पीछे वे घटनाओं और परिस्थितियों को जिम्मेदार मानते हैं। मेहता जी ने राम का व्यक्तित्व परिवर्तन दिखाया है। वे संघर्ष और युद्ध के माध्यम से सीता को भी प्राप्त करना नहीं चाहते। इनके राम राम न रहकर सामान्य व्यक्ति बनकर पुकार उठतें हैं।

''हाय
आज तक मै निमित्त ही रहा
कुल के विनाश का
लेकिन
अब नहीं बनूँगा कारण
जन के विनाश का।''[8]

राजनीति में समदर्शिता के मूल्य का विशिष्ट स्थान है। राम ने धोबी को साहसिक व्यक्तित्व माना है। राम ने धोबी के प्रसंग के माध्यम से राज्य में तत्त्वगत एवं न्यायगत समदर्शिता की बात की है। कवि राम के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वंत्रतता को रेखांकित करते हुए कहता है–

''गूँगेपन से कहीं श्रेयस् है
वाचालता, जिस दिन
मनुष्य अभिव्यक्तिहीन हो जायेगा
वह सबसे अधिक
दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा
कैसा ही इतिहास पुरूष क्यों न हो।''[9]

शासक न्यायप्रिय और ईमानदारी की साक्षात् प्रतिमा होना चाहिए। वह प्रजा हितैषी होना चाहिए। वह अपनी शक्तियों का प्रयोग प्रजा की भलाई के लिए करे, उसकी अनुरक्षा करें न कि प्रजा का दोहन–

''लक्ष्मण !
राज्य या न्याय
संबंध नहीं होता
सत्ता के गोमुख पर बैठकर
उसके सारे शक्ति जलों को
अपने ही अभिषेक के लिए
सुरक्षित रखना–
वह कौन सा दर्शन है लक्ष्मण।''[10]

राज्य, न्याय और राष्ट्र को किसी परिधि में नहीं बांधा जा सकता। यह आग्रह और दुराग्रह से परे है। वह निष्पक्ष, यथार्थवत्, उदार तथा स्वतंत्र होता है। वह व्यक्तिगत संबंधों से भी परे होता है–

''राज्य, न्याय और राष्ट्र
व्यक्तियों तथा
संबंधों से ऊपर होने ही चाहिए।''[11]

राजा और प्रजा के बीच माधुर्यपूर्ण संबंध होने चाहिए। ऐसा होने से शासन व्यवस्था के संचालन में सुविधा रहती है तथा राजा नरक का अधिकारी नहीं होता। राजा और प्रजा के संबंध में कहा भी गया है 'यथा राजा तथा प्रजा'। अतः राजा और प्रजा के संबंध अन्योन्याश्रित होते हैं–

''संत षिरोमणि ने
राजा को 'प्रिय राजा' कहा है।
प्रजा नहीं,
कुछ समस्या तुमने
और भला 'प्रिय राजा'
कभी हो सकती है जग में दुखयारी।''[12]

राजा और प्रजा के संबंधों में पारस्परिक विष्वास का होना भी नितान्त आवष्यक है। प्रजा को अपने राजा से कुछ उपेक्षा होती है ि कह प्रत्येक नागरिक के लिए कल्याणकारी नीतियाँ बनायेगा और उनके साथ न्याय करेगा। 'प्रसाद पर्व' में सीता राम से कहती हैं कि किसी साधारण नागरिक ने आप पर उंगली उठाई है तो राजा होने के कारण आप का यह दायित्व है कि उनके प्रष्न का समाधान करें ताकि प्रजा का विष्वास बना रहे। अतः सीता राम को दायित्व निर्वहन के लिए कहती हैं–

''अनाम साधारणजन का विश्वास है
जिसे उसने निर्भय अभिव्यक्त किया है
तो राज्य, न्याय तथा आपको
उस अनाम प्रजा के विश्वास को
अभिव्यक्ति की
रक्षा करनी चाहिए।''[13]

आज परिवर्तित परिवेश में राजनीतिक मूल्यों में अवमूल्यन हो रहा है। इसमें स्वार्थ, धोखा, छल–प्रपंच, वैमनस्य और षड्यंत्र राजनीति का अंग बन गए हैं। अतः राज्य–प्राप्ति के लिए कुछ भी किया जा सकता है। नरेश मेहता जी धृतराष्ट्र के संदर्भ में कहते हैं–

''अंधे थे धृतराष्ट्र
साथ ही राजाओं के योग्य
कुटिल भी
तभी तो बैर, प्रेम, षड्यंत्र, क्षमा, परिताप
या कि काषाय
सभी कुछ कुटिल पूर्ण था।''[14]

राजनीति में त्याग भावना का विशिष्ट महत्त्व है। स्वर्गारोहण के समय युधिष्ठिर कहते है कि हमने अपने प्रियजनों के लिए राज्य को भी त्याग दिया है। बैर–भावना को भी छोड़ दिया। इस प्रकार नेरश मेहता जी ने युधिष्ठिर के माध्यम से त्याग भावना का उल्लेख करते हुए कहा है–

''हम तो हमारा सारा साम्राज्य
सम्पदा और जयाजय
प्रियजन, परिजन और प्रजाजन
बैर–राग सब कुछ को
परिव्राजक बन
काल महाब्राह्मण को दे
संकल्पजलों सा
छोड़ चले आये इस पथ पर।''[15]

वर्तमान परिवेश में मानव और मानवता अवमूल्यन की ओर अग्रसर है। मानव मूल्यों का त्याग करके समाज और राजनीति जिस दिशा की ओर अग्रसर हैं वे समाज और देश के लिए शुभ संकेत नहीं है। संकटकाल में व्यक्ति का व्यवहार परिवर्तित हो जाता है कवि ने युधिष्ठिर जैसे विशाल व्यक्तित्व सम्पन्न योद्धा को भी विचलित दिखाकर मानव स्वभावगत कमजोरी को उजागर किया गया।

''हमारे इन अमानवीय मूल्यों के
ये ही तो ऐतिहासिक निष्कर्ष निकले कि–
अर्जुन से श्रेष्ठ कोई योद्धा नहीं
और युधिष्ठिर ही
एकमात्र चक्रर्ती सम्राट है
मानवता का यह रथ
किस अन्धे मार्ग पर आगे बढ़ रहा है।
तुम नही जानते पार्थ!
संकट कहीं अधिक गहरा है।''[16]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि नरेश मेहता की काव्यकृतियों में राजनीतिक प्रभाव तथा राजनीतिक मूल्यों का अवमूल्यन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन्होंने पौराणिक आख्यानों के माध्यम से आधुनिक समास्याओं को उठा कर राजनीति और राजनीतिक मूल्यों को तलाशने का सार्थक प्रयास किया है। केवल यहीं नहीं इन्होंने अपने काव्य में व्यक्ति और राज–व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित कर मानव–मुक्ति की संभावनाओं पर पर्याप्त मंथन किया है ताकि राजनीतिज्ञ सुचारू रूप से शासन व्यवस्था का संचालन कर सकें। साथ ही सत्ता की बागडोर हाथ में आते हीश्शासक किस प्रकार भ्रष्ट हो जाते हैंउन्हें केवल निजी हित ही दिखाई देता है तथा वे न्याय, धर्म, और दर्शन एवं अन्य संसाधनों को अपनी धरोहर मानने लगते हैं। इस प्रकार नेरश मेहता जी ने पौराणिक आख्यानों की राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से समकालीन संदर्भों को लेकर राजनीतिक संक्रमण का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. नरेश मेहता, महाप्रस्थान, पृ. 55
2. वही, देखा एक दिन, पृ. 53
3. वही, पिछले दिनों नंगे पांवों, पृ. 82
4. वही, संशय की एक रात, पृ. 74
5. वही, पिछले दिनों नंगे पांवों, पृ. 71
6. वही, संशय की एक रात, पृ. 100
7. वहीं, वहीं, पृ. 10
8. वही, महाप्रस्थान, पृ. 44–45
9. वहीं, प्रसाद पर्व, पृ. 31
10. वही, वही, पृ. 33
11. वही, वही, पृ. 42
12. वही, पिछले दिनों नंगे पांवों, पृ. 131
13. वही, महाप्रस्थान, पृ. 131
14. वही, वही, पृ. 97
15. वही, वही, पृ. 55
16. वही, पिछले दिनों नंगे पांवों, पृ. 120